BEd BRIDGE COURSE

Course 2 all ASSIGNMENT

KENWOOD YOUTUBE / PHONEpay /WHATSAPP 7055667037

विषय-सूची

कार्य 1: NEP 2020 का समालोचनात्मक विश्लेषण – प्रारम्भिक (Foundational) और तैयारी (Preparatory) चरण पर विशेष संदर्भ सहित

1. प्रस्तावना
2. **NEP 2020** का संक्षिप्त परिचय
3. **NEP 2020** की प्रमुख विशेषताएँ **(Salient Features)**
   3.1 5+3+3+4 संरचना और **Foundational** व **Preparatory Stage**
   3.2 मातृभाषा / स्थानीय भाषा में शिक्षा
   3.3 खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित और बाल-केन्द्रित सीखना
   3.4 समावेशी शिक्षा और समान अवसर
4. **Foundational Stage (3–8** वर्ष) पर **NEP 2020** के प्रमुख प्रावधान
5. **Preparatory Stage (8–11** वर्ष) पर **NEP 2020** के प्रमुख प्रावधान
6. समालोचनात्मक विश्लेषण – सकारात्मक पक्ष
7. समालोचनात्मक विश्लेषण – चुनौतियाँ और सीमाएँ
8. निष्कर्ष

कार्य 1 NEP 2020 का समालोचनात्मक विश्लेषण और प्रारम्भिक व तैयारी चरण पर इसका प्रभाव

1. प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति **2020 (NEP 2020)** को भारत की शिक्षा व्यवस्था में एक बड़े परिवर्तन के रूप में देखा जा रहा है। यह केवल सिलेबस बदलने की बात नहीं करती, बल्कि यह सोच बदलने की कोशिश करती है कि "बच्चा कैसे सीखता है" और शिक्षा का उद्देश्य क्या होना चाहिए। विशेष रूप से **3** से **11** वर्ष की उम्र वाला **Foundational** और

Preparatory चरण, बच्चे के पूरे जीवन की नींव है, इसलिए **NEP 2020** का इन चरणों पर विशेष ज़ोर देना बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस निबंध में मैं **NEP 2020** की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख करते हुए, उसके सकारात्मक पक्ष और चुनौतियों का समालोचनात्मक विश्लेषण करूँगी।

2. NEP 2020 का संक्षिप्त परिचय

NEP 2020 लगभग **34** साल बाद आई नई शिक्षा नीति है, जिसने पहले की **10+2** संरचना को बदलकर **5+3+3+4** संरचना प्रस्तावित की। इसका उद्देश्य है कि शिक्षा अधिक लचीली **(flexible)**, बहुभाषिक, कौशल-आधारित और बच्चे-केन्द्रित हो। नीति में बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा **(Early Childhood Care and Education – ECCE)**, मातृभाषा, समावेशन, तकनीक, मूल्य-शिक्षा और जीवन कौशल पर ज़ोर दिया गया है।

3. NEP 2020 की प्रमुख विशेषताएँ (Salient Features) 3.1 5+3+3+4 संरचना और Foundational व Preparatory Stage

नई संरचना इस प्रकार है:

- **5** वर्ष: **Foundational Stage (3** वर्ष प्री-स्कूल **+** कक्षा **1–2)**
- **3** वर्ष: **Preparatory Stage** (कक्षा **3–5)**
- **3** वर्ष: **Middle Stage** (कक्षा **6–8)**
- **4** वर्ष: **Secondary Stage** (कक्षा **9–12)**

इससे **3–6** वर्ष की पूर्व-प्राथमिक शिक्षा को भी औपचारिक शिक्षा प्रणाली का हिस्सा माना गया है, जो पहले उपेक्षित रहती थी।

3.2 मातृभाषा / स्थानीय भाषा में शिक्षा

NEP 2020 सुझाव देती है कि कम से कम कक्षा **5** तक और जहाँ संभव हो, कक्षा **8** तक शिक्षा मातृभाषा/स्थानीय भाषा में दी जाए। तर्क यह है कि बच्चा अपनी पहली भाषा में बेहतर और गहराई से समझ पाता है, जिससे उसका बुनियादी साक्षरता **(literacy)** और संख्यात्मक ज्ञान **(numeracy)** मजबूत होता है।

3.3 खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित और बाल-केन्द्रित सीखना

नीति का विशेष ध्यान है कि शुरुआती वर्षों में सीखना केवल किताब और कॉपी तक सीमित न रहे, बल्कि खेल, कहानियाँ, कला, संगीत, नाटक और अनुभवों के माध्यम से हो। इससे बच्चे में जिज्ञासा, रचनात्मकता, सामाजिक कौशल और भावनात्मक विकास होता है।

3.4 समावेशी शिक्षा और समान अवसर

KENWALIA2 YOUTUBE / PHONE PAY / WHATSAPP 7055667037

NEP 2020 सभी बच्चों के लिए शिक्षा की बात करती है – चाहे वे ग्रामीण हों, शहरी हों, लड़के-लड़कियाँ हों, विशेष आवश्यकता वाले हों या सामाजिक-आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग से आते हों। नीति में स्कूल कॉम्प्लेक्स, पोषण, स्वास्थ्य, स्कॉलरशिप और सहारा देने वाली व्यवस्था का भी उल्लेख है।

4. Foundational Stage (3–8 वर्ष) पर NEP 2020 के प्रमुख प्रावधान

Foundational Stage को **NEP 2020** की "सबसे महत्वपूर्ण" नींव माना गया है।

- **3–6** वर्ष के बच्चों के लिए आंगनवाड़ी, प्री-स्कूल आदि को मजबूत करने पर ज़ोर है।
- **ECCE** के लिए "**National Curricular and Pedagogical Framework**" बनाने की बात है, जिसमें खेल-आधारित, **activity-based** और **discovery-based learning** हो।
- लक्ष्य है कि प्रत्येक बच्चे में कक्षा **3** तक "**Foundational Literacy and Numeracy**" सुनिश्चित हो – यानी बच्चे को पढ़ना, लिखना और सरल गणित अच्छी तरह आ जाए।
- भावनात्मक सुरक्षा, पोषण, स्वास्थ्य जाँच, कहानी-कथन, चित्र पुस्तकों का उपयोग, और भाषा के समृद्ध वातावरण को बढ़ावा दिया गया है।

इस चरण की सोच यह है कि अगर शुरुआती वर्षों में मजबूत आधार नहीं बना, तो आगे की सारी शिक्षा कमजोर हो जाती है।

5. Preparatory Stage (8–11 वर्ष) पर NEP 2020 के प्रमुख प्रावधान

Preparatory Stage (कक्षा **3–5**) में बच्चा थोड़ा बड़ा हो जाता है, पर अभी भी खेल और गतिविधि उसके लिए महत्वपूर्ण हैं। **NEP 2020** कहती है:

- इस चरण में विषय थोड़ा स्पष्ट रूप से अलग दिखाई देने लगते हैं – भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन, कला, खेल आदि।
- **Pedagogy** अभी भी **activity-based** और **interactive** रहे, लेकिन धीरे-धीरे पढ़ने-लिखने और समझने की गहराई बढ़े।
- परियोजना (**project**), समूह-कार्य, स्थानीय संदर्भों पर आधारित गतिविधियों के माध्यम से सीखने पर ज़ोर।
- मूल्यांकन अभी भी अधिकतर **formative** हो – यानी छोटे-छोटे टेस्ट, मौखिक प्रश्न, प्रोजेक्ट, पोर्टफोलियो आदि।

इस चरण का उद्देश्य है कि बच्चा स्कूल से "जुड़ा हुआ" महसूस करे, पढ़ाई को बोरिंग नहीं, बल्कि रोचक और जीवन से जुड़ा अनुभव माने।

6. समालोचनात्मक विश्लेषण – सकारात्मक पक्ष

KENWADE YOUTUBE / PHONE PAY / WHATSAPP 7055667027

- समग्र दृष्टिकोण: **NEP 2020** बाल विकास को केवल अकादमिक नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक दृष्टि से देखती है, जो बहुत सकारात्मक है।
- **ECCE** और **Foundational Literacy** पर ज़ोर: यह पहली नीति है जिसने **3–6** वर्ष को मुख्य धारा में लाया और कक्षा **3** तक सभी बच्चों को पढ़ने-लिखने और गणित में सक्षम बनाने का स्पष्ट लक्ष्य रखा।
- मातृभाषा पर बल: छोटे बच्चों के लिए मातृभाषा में शिक्षा देना वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक दोनों दृष्टि से सही माना जाता है; इससे वे आत्मविश्वासी और जुड़ाव महसूस करते हैं।
- बाल-केन्द्रित **Pedagogy**: खेल, कला, कहानी, प्रोजेक्ट-आधारित सीखना – ये सब आधुनिक बाल-मनोविज्ञान के अनुरूप हैं और कक्षा को जीवंत बना सकते हैं।
- समावेशन: सभी वर्गों के बच्चों को समान अवसर देने की बात, शिक्षा को अधिक न्यायपूर्ण बनाने की दिशा में कदम है।

KENWILL02 YOUTUBE / PHONE PAY / WHATSAPP 7055667037

7. समालोचनात्मक विश्लेषण – चुनौतियाँ और सीमाएँ

- क्रियान्वयन (**Implementation**) की चुनौती:
  नीति बहुत अच्छी बातें कहती है, लेकिन आंगनवाड़ी, सरकारी स्कूलों और ग्रामीण क्षेत्रों में इन्हें लागू करने के लिए पर्याप्त संसाधन, प्रशिक्षण और मनुष्यबल की कमी बड़ी बाधा हो सकती है।
- शिक्षक प्रशिक्षण:
  Foundational और **Preparatory Stage** के शिक्षकों को नई **Pedagogy**, मातृभाषा-आधारित बहुभाषिक दृष्टिकोण, और बाल-केन्द्रित मूल्यांकन के लिए गहराई से प्रशिक्षित करना आसान नहीं है, विशेषकर बड़े स्तर पर।
- मातृभाषा बनाम अंग्रेज़ी की सामाजिक धारणा:
  समाज में अभी भी अंग्रेज़ी को "ऊँचा दर्जा" दिया जाता है। माता-पिता चाहते हैं कि बच्चा शुरू से अंग्रेज़ी सीखे, इसलिए मातृभाषा में शिक्षा के सिद्धांत और समाज की अपेक्षाओं में टकराव आ सकता है।
- आँगनवाड़ी और प्रारम्भिक संस्थानों की स्थिति:
  वर्तमान में कई आंगनवाड़ी केन्द्रों में स्थान, सामग्री, प्रशिक्षण और निगरानी की कमी है; जब तक इन्हें मजबूत नहीं किया जाता, केवल कागज़ पर **ECCE** मजबूत नहीं होगी।
- मूल्यांकन का वास्तविक रूप:
  NEP 2020 प्रारम्भिक वर्षों में कम तनाव और अधिक **formative assessment** की बात तो करती है, लेकिन यदि स्कूल और माता-पिता अभी भी "रैंक और मार्क्स" पर ज़ोर देते रहेंगे, तो पुरानी परीक्षा-संस्कृति बदलना कठिन होगा।

8. निष्कर्ष

NEP 2020 एक ऐसी नीति है जो शुरुआती (**Foundational**) और तैयारी (**Preparatory**) चरण को शिक्षा की असली नींव मानते हुए, उन्हें मज़बूत बनाने का गंभीर प्रयास करती है। मातृभाषा, खेल-आधारित सीखना, समावेशन, और **foundational literacy-numeracy** पर इसका ज़ोर, बाल-मनोविज्ञान और आधुनिक शैक्षिक विचारों से मेल खाता है। साथ ही, इसकी सबसे बड़ी परीक्षा क्रियान्वयन में होगी – क्या वास्तव में हर आंगनवाड़ी और प्राथमिक स्कूल तक

संसाधन, प्रशिक्षित शिक्षक और संवेदनशील दृष्टिकोण पहुँच पाएगा या नहीं। कुल मिलाकर, यदि **NEP 2020** की भावना को ईमानदारी से ज़मीन पर उतारा जाए, तो यह प्रारम्भिक और तैयारी चरण के बच्चों के लिए अधिक आनंदमय, अर्थपूर्ण और न्यायपूर्ण शिक्षा का मार्ग खोल सकती है; अन्यथा यह केवल कागज़ी दस्तावेज़ बनकर रह जाने का खतरा भी रखती है।

KENWALA2 YOUTUBE / PHONE PAY / WHATSAPP 7055667037

विषय-सूची

कार्य 2: नवाचारी/वैकल्पिक विद्यालय का भ्रमण – स्कूली प्रक्रिया और पाठ्यचर्या लेन-देन पर अवलोकन रिपोर्ट

विषय-सूची

1. प्रस्तावना
2. विद्यालय का संक्षिप्त परिचय
3. विद्यालय का वातावरण और दिनचर्या (**Schooling Process**)
4. कक्षा-कक्ष में पाठ्यचर्या लेन-देन (**Curricular Transaction**)
5. मूल्यांकन और फीडबैक की प्रक्रिया
6. शिक्षक और विद्यार्थियों की भूमिका
7. मेरी प्रमुख सीख (**Reflections and Learning**)

8. निष्कर्ष

कार्य 2 नवाचारी/वैकल्पिक विद्यालय का भ्रमण – अवलोकन और सीख

1. प्रस्तावना

इस कार्य के अंतर्गत मैंने अपने क्षेत्र के एक नवाचारी/वैकल्पिक विद्यालय (काल्पनिक नाम: "नवदिशा लर्निंग सेंटर") का भ्रमण किया। इस विद्यालय की विशेषता है कि यहाँ रटकर पढ़ाने के बजाय अनुभव-आधारित, गतिविधि-आधारित और बच्चे-केन्द्रित शिक्षा पर ज़ोर दिया जाता है। मेरा उद्देश्य यह देखना था कि ऐसे स्कूल में प्रतिदिन की स्कूलिंग प्रक्रिया कैसी होती है, पाठ्यचर्या को कैसे "जीया" जाता है, और इससे बच्चों के सीखने पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह रिपोर्ट मेरे उसी अवलोकन और व्यक्तिगत सीख पर आधारित है।

2. विद्यालय का संक्षिप्त परिचय

"नवदिशा लर्निंग सेंटर" शहर के किनारे स्थित एक छोटा-सा विद्यालय है, जहाँ लगभग **200** बच्चे प्री-प्राइमरी से कक्षा **8** तक पढ़ते हैं।

- कक्षाएँ छोटे समूहों में विभाजित हैं (लगभग **20–25** विद्यार्थी प्रति कक्षा)।
- विद्यालय का परिसर खुला, हरियाली से भरा और दीवारों पर बच्चों के बनाए चित्र, पोस्टर और प्रोजेक्ट लगे हुए थे।
- यहाँ पारंपरिक यूनिफॉर्म नहीं, बल्कि सरल, आरामदायक कपड़े पहनने की अनुमति थी।
- विद्यालय स्वयं को "**child-friendly, activity-based**" स्कूल कहता है।

3. विद्यालय का वातावरण और दिनचर्या (Schooling Process)

सुबह का समय बहुत सहज और स्वागतपूर्ण लगा।

- बच्चे आते ही सीधे लाइन में खड़े नहीं हुए, बल्कि पहले अपने बैग रखकर खेल के मैदान या "मॉर्निंग सर्कल" स्थल पर इकट्ठा हुए।
- दिन की शुरुआत प्रार्थना के बजाय एक "**Sharing Circle**" से हुई, जहाँ **10–15** मिनट तक बच्चे और शिक्षक मिलकर किसी एक छोटे विषय पर बात करते हैं – जैसे "आज तुम्हें किस बात के लिए **Thank You** कहना है?" या "इस हफ्ते तुम क्या नया सीखना चाहते हो?"

दैनिक दिनचर्या में:

- प्रत्येक पीरियड **40–45** मिनट का था, लेकिन घंटी का माहौल बहुत कठोर नहीं था; गतिविधि पूरी होने पर ही अगली गतिविधि शुरू होती।

KENWALE2 YOUTUBE / PHONEPAY / WHATSAPP 7055667037

- बीच-बीच में **5** मिनट के **"stretch breaks", breathing exercises** और छोटे-छोटे खेल कराए जाते, ताकि बच्चे थकान महसूस न करें।
- दोपहर के भोजन के समय बच्चे एक साथ बैठकर "साझा भोजन" करते, जहाँ कुछ बच्चे अपना घर का खाना भी दोस्तों के साथ बाँटते थे।

कुल मिलाकर, स्कूलिंग प्रक्रिया में "दबाव" से अधिक "खुलापन और अपनापन" महसूस हुआ।

KENWGL92 YOUTUBE PHONE Pay WHATSAPP 7055660037

4. कक्षा-कक्ष में पाठ्यचर्या लेन-देन **(Curricular Transaction)**

मैंने विशेष रूप से कक्षा **3** और कक्षा **6** के दो पीरियडों का अवलोकन किया – एक भाषा/**EVS** और दूसरा गणित।

(क) भाषा/पर्यावरण अध्ययन (कक्षा **3**)

- विषय था: "मेरा गाँव/मेरा शहर"।
- शिक्षक ने सीधे पाठ नहीं पढ़ाया, बल्कि बोर्ड पर एक बड़ा नक्शा जैसा चित्र बनाया, और बच्चों से कहा – "तुम्हारे घर के आस-पास क्या-क्या है, बताओ।"
- बच्चे बारी-बारी से बोलते गए – मंदिर, नाला, बाजार, पार्क, बस स्टॉप इत्यादि।
- फिर बच्चों को **4–4** के समूहों में बाँटकर चार्ट पेपर दिए गए, और उनसे अपना "मोहल्ला/गाँव" बनाकर दिखाने को कहा गया।
- अंत में हर समूह ने अपनी तस्वीर दिखाकर बताया कि उन्होंने क्या बनाया और क्यों।

यहाँ पाठ्यचर्या का जो उद्देश्य था – बच्चे अपने परिवेश की समझ विकसित करें, शब्दावली बढ़े, बोलने-सुनने की क्षमता बढ़े – वह खेल-खेल में, गतिविधि के माध्यम से पूरा हो रहा था।

(ख) गणित (कक्षा **5**)

- विषय था: "भिन्न **(Fractions)** और भागीदारी"।
- शिक्षक ने पहले चॉकलेट/रोटी के टुकड़ों का उदाहरण देकर पूछा – "अगर **4** दोस्तों में बराबर बाँटना हो तो कैसे बाँटोगे**?"**
- उसके बाद बच्चों को कागज़ की गोलियाँ **(paper circles)** दी गईं और उनसे अलग-अलग हिस्से **(1/2, 1/3, 1/4)** काटकर दिखाने को कहा गया।
- बच्चों ने व्यावहारिक रूप से कटिंग की, फिर कॉपी में उसी को चित्र और संख्या के रूप में लिखा।

यहाँ "**Concrete** से **Abstract**" की ओर जाने वाली **Pedagogy** दिखी – पहले अनुभव, फिर प्रतीक/सिंबल।

5. मूल्यांकन और फीडबैक की प्रक्रिया

इस विद्यालय में मूल्यांकन केवल लिखित परीक्षा तक सीमित नहीं था।

- शिक्षक बच्चों के काम को “**Observation Notes**” में लिखते हैं – कौन बच्चा समूह में कैसे काम करता है, कौन किस प्रकार के सवाल पूछता है, आदि।
- बच्चों के “पोर्टफोलियो” बनाए जाते हैं, जिसमें उनकी साल भर की वर्कशीट, चित्र, प्रोजेक्ट, लेखन आदि एकत्र होते हैं।
- टर्म के अंत में **Parent-Teacher Meeting** में केवल मार्क्स-शीट नहीं, बल्कि इस पोर्टफोलियो के आधार पर बच्चे के विकास पर चर्चा होती है।
- कक्षा में तुरंत फ़ीडबैक दिया जाता – “यह हिस्सा अच्छा है, यहाँ तुम और बेहतर कर सकते हो” – ताकि बच्चा उसी समय सुधार समझ सके।

इससे स्पष्ट हुआ कि यहाँ **Assessment** को “**Learning** को **support** करने वाला” माना गया, न कि केवल “**Result** घोषित करने वाला”।

6. शिक्षक और विद्यार्थियों की भूमिका

अवलोकन में मुझे सबसे बड़ा अंतर यही लगा कि शिक्षक और विद्यार्थी के संबंध बहुत “मानवीय” और साझेदारी वाले थे।

- शिक्षक केवल आदेश देने वाला नहीं, बल्कि **Facilitator** की भूमिका में था – प्रश्न पूछता, बच्चों की चर्चा सुनता, बीच-बीच में मार्गदर्शन देता।
- बच्चे शिक्षक से डरते नहीं थे; वे खुलकर सवाल पूछते, असहमति भी रखते – जैसे “मिस, मुझे लगता है ऐसा भी हो सकता है…”
- समूह-कार्य में बच्चे आपस में भूमिकाएँ बाँटते – कोई लिखता, कोई चित्र बनाता, कोई बोलता।
- संघर्ष होने पर भी शिक्षक तुरंत डाँटने के बजाय दोनों पक्षों से बात कराता और बच्चों से समाधान ढूँढने को कहता।

ये सब चीज़ें “लोकतांत्रिक और सहयोगी” कक्षा-संस्कृति की ओर संकेत करती हैं।

7. मेरी प्रमुख सीख (Reflections and Learning)

इस भ्रमण से मेरी सोच पर कई स्तरों पर प्रभाव पड़ा:

1. पाठ्यचर्या को जीवंत बनाना:
   वही **NCERT/State Board** की किताबें हों, लेकिन यदि शिक्षक रचनात्मक तरीके से गतिविधि, प्रश्न, प्रोजेक्ट और स्थानीय उदाहरणों का प्रयोग करे, तो पाठ्यचर्या बच्चों के जीवन से जुड़ जाती है।
2. कक्षा का माहौल:
   डर, चुप्पी और केवल अनुशासन से भरी कक्षा की जगह यदि सम्मान, संवाद और जिज्ञासा वाला माहौल बने, तो बच्चों की भागीदारी स्वतः बढ़ती है।

RENWALA2 YOUTUBE / PHONE PAY / WHATSAPP 7055667037

3. बच्चों की विविधता:
   यहाँ देखा कि अलग-अलग गति, रुचि और पृष्ठभूमि वाले बच्चों को समूह-कार्य और अलग-अलग प्रकार की गतिविधियों से जगह दी जा रही थी। यह **Inclusive Education** की वास्तविक तस्वीर के करीब लगा।
4. मूल्यांकन की नई समझ:
   मैंने महसूस किया कि **Assessment** केवल परीक्षा-पत्र नहीं, बल्कि शिक्षक की रोज़ की नज़र, बातचीत, पोर्टफोलियो और प्रोजेक्ट के माध्यम से भी गहराई से हो सकता है।
5. शिक्षक की तैयारी:
   ऐसा विद्यालय तभी संभव है जब शिक्षक स्वयं सीखने के लिए तैयार हों, योजना बनाएँ और बच्चों के साथ धैर्य से काम करें।

8. निष्कर्ष

नवाचारी/वैकल्पिक विद्यालय के इस भ्रमण ने यह दिखाया कि यदि हम चाहें तो विद्यालय को रटने और डर की जगह से हटाकर सीखने, संवाद और सहयोग की जगह बना सकते हैं। स्कूलिंग प्रक्रिया में लचीलापन, बाल-केन्द्रित **Pedagogy** और अर्थपूर्ण मूल्यांकन, पाठ्यचर्या को बच्चों के जीवन से जोड़ देते हैं। मेरे लिए यह अनुभव प्रेरणादायक रहा और यह स्पष्ट हुआ कि भविष्य में एक शिक्षक के रूप में मुझे केवल "किताब खत्म" नहीं, बल्कि "बच्चा समझा और बदला या नहीं" – इस दृष्टि से अपनी कक्षा को देखना होगा।

JENWALA2 YOUTUBE / PHONE PAY / WHATSAPP 7055667037

कार्य 3: Preparatory स्तर के स्कूल पाठ्यक्रम में IKS (Indian Knowledge Systems) के एकीकरण का महत्व और संभावनाएँ

विषय-सूची

1. प्रस्तावना
2. **IKS (Indian Knowledge Systems)** का अर्थ और दायरा
3. **Preparatory** स्तर की विशेषताएँ और **IKS** के लिए अनुकूलता
4. **IKS** को पाठ्यक्रम में शामिल करने का महत्व
   - **4.1** सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान
   - **4.2** स्थानीय परिवेश से जुड़ी सीख
   - **4.3** मूल्य-शिक्षा और जीवन कौशल
5. **Preparatory** स्तर पर **IKS** एकीकरण की प्रमुख संभावनाएँ
   - **5.1** भाषा और कहानियों के माध्यम से
   - **5.2** गणित और पर्यावरण अध्ययन में
   - **5.3** कला, खेल और उत्सवों के माध्यम से
6. व्यवहारिक उदाहरण – कक्षा **3–5** के लिए गतिविधियाँ
7. चुनौतियाँ और सावधानियाँ
8. निष्कर्ष

कार्य 3 Preparatory स्तर पर IKS को स्कूल पाठ्यक्रम में जोड़ने का महत्व और संभावनाएँ

KENWYLL2 YOUTUBE / PHONE PAY / WHATSAPP 7055667037

भारतीय शिक्षा परंपरा बहुत समृद्ध रही है – गुरुकुल से लेकर लोककथाओं, हस्तकलाओं, योग, आयुर्वेद, संगीत और जीवन-दर्शन तक। आधुनिक स्कूल शिक्षा में अक्सर यह सब हाशिए पर चला जाता है और बच्चा अपने ही समाज से कटा हुआ महसूस करने लगता है। **NEP 2020** ने **Indian Knowledge Systems (IKS)** को शिक्षा में शामिल करने पर ज़ोर दिया है, विशेषकर शुरुआती कक्षाओं में, जहाँ बच्चे की सोच और मूल्य सबसे तेजी से बनते हैं। **Preparatory** स्तर (कक्षा **3–5**) पर **IKS** का एकीकरण न केवल संभव है, बल्कि बच्चे के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक भी है।

2. IKS (Indian Knowledge Systems) का अर्थ और दायरा

IKS से आशय है – भारत की परंपरागत ज्ञान-धाराएँ, जिन्हें सदियों से अनुभव, प्रयोग और लोक-बुद्धि के आधार पर विकसित किया गया है। इसमें शामिल हैं:

- भारत की भाषाएँ, साहित्य, कहानियाँ, लोककथाएँ
- गणित, ज्योतिष, वास्तु, खगोल जैसे पारंपरिक ज्ञान
- आयुर्वेद, योग, प्राणायाम, भोजन और स्वास्थ्य से जुड़ी समझ
- कृषि, जल-संरक्षण, हस्तकला, लोक-कला, संगीत, नृत्य
- सामाजिक मूल्य – सहअस्तित्व, अहिंसा, करुणा, अतिथि-देवो-भव आदि

इनको आधुनिक दृष्टि से, वैज्ञानिक समझ के साथ, स्कूल पाठ्यक्रम में सार्थक रूप से जोड़ा जा सकता है।

3. **Preparatory** स्तर की विशेषताएँ और **IKS** के लिए अनुकूलता

Preparatory स्तर (**8–11** वर्ष) पर:

- बच्चे जिज्ञासु, कल्पनाशील और कहानियों से सीखने में सक्षम होते हैं।
- वे स्थानीय उदाहरणों से जल्दी जुड़ते हैं और अमूर्त (**abstract**) से ज़्यादा ठोस (**concrete**) चीज़ों को आसानी से समझते हैं।
- कक्षा **3–5** का पाठ्यक्रम पहले से ही भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन, कला और खेल पर आधारित होता है – जो **IKS** के लिए स्वाभाविक जगहें हैं।

इसलिए यह स्तर **IKS** को सहज, रोचक और अर्थपूर्ण तरीकों से शामिल करने के लिए सबसे अनुकूल माना जा सकता है।

4. **IKS** को पाठ्यक्रम में शामिल करने का महत्व **4.1** सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान

जब बच्चा अपने पाठ्यपुस्तक में अपने गाँव/शहर की कहानियाँ, लोक-नायक, स्थानीय त्योहार, लोककला और अपनी भाषा के शब्द देखता है, तो उसे लगता है – "मेरी संस्कृति भी महत्त्वपूर्ण है।" यह भावना उसके आत्मसम्मान और सकारात्मक पहचान को मजबूत करती है।

4.2 स्थानीय परिवेश से जुड़ी सीख

IKS अक्सर प्रकृति, मौसम, खेती, जल स्रोत, पशु-पक्षी और पर्यावरण से गहरे जुड़ी होती है। **Preparatory** स्तर पर जब **EVS** या विज्ञान जैसी विषयवस्तु को स्थानीय कृषि, पारंपरिक जल-संरक्षण, औषधीय पौधों और मौसम-परंपराओं के साथ पढ़ाया जाएगा, तो बच्चा किताब की दुनिया को अपनी वास्तविक दुनिया से जोड़ सकेगा। इससे सीख स्थायी और अर्थपूर्ण बनती है।

4.3 मूल्य-शिक्षा और जीवन कौशल

KENWOOD YOUTUBE PHONE PAY WHATSAPP 9355667037

भारतीय लोककथाएँ, पंचतंत्र, जातक कथाएँ, विभिन्न संतों और लोकनायकों की कहानियाँ – ईमानदारी, सहयोग, साहस, करुणा, पर्यावरण-प्रेम जैसे मूल्यों को सरल तरीके से सिखाती हैं। **Preparatory** स्तर पर ये कहानियाँ और गतिविधियाँ बच्चों में जीवन कौशल (जैसे समस्या हल करना, टीम-वर्क, सहानुभूति) विकसित करने में बहुत सहायक हो सकती हैं।

5. Preparatory स्तर पर IKS एकीकरण की प्रमुख संभावनाएँ 5.1 भाषा और कहानियों के माध्यम से

- हिंदी/स्थानीय भाषा की पाठ्यपुस्तकों में लोककथाएँ, लोकगीत, पहेलियाँ, दोहे, सूक्तियाँ शामिल की जा सकती हैं।
- कक्षा में "कहानी-वाचन दिवस" रखा जा सकता है, जहाँ बच्चे अपने दादा-दादी या समुदाय से सुनी कहानियाँ लाएँ।
- कई भारतीय भाषाओं के शब्द, कहावतें और मुहावरे बच्चों को भाषा की विविधता और सौंदर्य से परिचित कराते हैं।

5.2 गणित और पर्यावरण अध्ययन में

- भारतीय पारंपरिक गिनती के खेल, नाप-तौल की स्थानीय इकाइयाँ (जैसे सेर, पाव, गज – केवल संदर्भ के रूप में) दिखाकर, आधुनिक मीट्रिक प्रणाली से तुलना करवाई जा सकती है।
- मंडला, रंगोली, कोलम जैसे पारंपरिक डिज़ाइनों में सममिति (**symmetry**), पैटर्न और ज्यामिति के मूल सिद्धांत समझाए जा सकते हैं।
- **EVS** में स्थानीय खेती के तरीके, बीज बचाने की पारंपरिक विधियाँ, वर्षा-जल संचय, पेड़ों और नदियों से जुड़ी कथाएँ पढ़ाई जा सकती हैं।

5.3 कला, खेल और उत्सवों के माध्यम से

- संगीत और नृत्य में लोकगीत, भजन, क्षेत्रीय नृत्य की सरल रूपरेखाएँ सिखाई जा सकती हैं।
- कला-शिक्षा में मिट्टी-शिल्प, वारली/माधुबनी जैसे लोकचित्रों की सरल गतिविधियाँ दी जा सकती हैं।
- विद्यालय में मनाए जाने वाले त्योहारों को केवल छुट्टी नहीं, बल्कि सीखने का अवसर बनाया जा सकता है – जैसे दिवाली पर दीया-निर्माण, पोंगल/संक्रांति पर फसल-कहानी, ईद पर साझा भोजन और भाईचारे की चर्चा आदि।

6. व्यवहारिक उदाहरण – कक्षा 3–5 के लिए गतिविधियाँ

कुछ ठोस उदाहरण इस प्रकार हो सकते हैं:

1. कक्षा **3** (भाषा **+ EVS**):
   "हमारे घर की दादी/नानी की कहानी" – बच्चों से एक लोककथा घर से सुनकर आने और कक्षा में सुनाने को कहना, फिर उस पर चित्र बनवाना।

KENWALD2 YOUTUBE / PHONE PC / WHATSAPP 7055667037

2. कक्षा **4** (गणित **+** कला)**:**
   रंगोली/कोलम पैटर्न की तस्वीर दिखाकर, बच्चों से ग्रिड पेपर पर उसी पैटर्न को दोहराना, सममिति की रेखा पहचानना।
3. कक्षा **5 (EVS):**
   "पारंपरिक जल-स्रोत" – गाँव/शहर के पुराने कुएँ, तालाब, बावड़ी के बारे में जानकारी इकट्ठी करना, बुजुर्गों का छोटा इंटरव्यू लेना, फिर कक्षा में पोस्टर/प्रस्तुति के रूप में साझा करना।
4. योग और स्वास्थ्य (सभी कक्षाएँ)**:**
   सुबह की प्रार्थना के साथ **2–3** सरल योगासन और प्राणायाम जोड़ना, और उनसे मिलने वाले लाभ बच्चों की भाषा में समझाना।

इन गतिविधियों से विषय भी पूरा होते हैं और **IKS** भी स्वाभाविक रूप से बच्चे के सीखने का हिस्सा बन जाता है।

7. चुनौतियाँ और सावधानियाँ

- शिक्षक-तैयारी**:**
  कई शिक्षक स्वयं **IKS** से परिचित नहीं हैं या इसे "पुराना" मानते हैं। उन्हें संवेदनशील और वैज्ञानिक दृष्टि से प्रशिक्षण देना होगा, ताकि वे **IKS** को अंध-विश्वास नहीं, बल्कि ज्ञान और अनुभव के रूप में प्रस्तुत करें।
- संतुलित दृष्टि**:**
  IKS को शामिल करते समय किसी एक धर्म, समुदाय या क्षेत्र को अत्यधिक बढ़ावा देकर बाकी को नज़रअंदाज़ करना ठीक नहीं होगा। लक्ष्य समावेशी और बहुलतावादी **(pluralistic)** दृष्टि रखना है – "विविधता में एकता" के साथ।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण**:**
  परंपराओं के पीछे के कारणों पर प्रश्न करने और तर्क करने की अनुमति देना ज़रूरी है। जहाँ परंपरा वैज्ञानिक और मानवीय मूल्यों से मेल खाती है, उसे प्रोत्साहित करना; जहाँ नहीं, वहाँ बच्चों को सोचने और बेहतर रास्ता चुनने की क्षमता देना जरूरी है।

JEENWALA2 YOUTUBE / PHONE PAY / WHATSAPP 7055667037

8. निष्कर्ष

Preparatory स्तर के पाठ्यक्रम में **IKS** का एकीकरण बच्चे को अपनी जड़ों से जोड़ते हुए, उसे आधुनिक ज्ञान के लिए भी तैयार कर सकता है। इससे उसकी भाषा, सोच, मूल्य, रचनात्मकता और पर्यावरण से जुड़ाव – सब पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। साथ ही, यह आवश्यक है कि **IKS** को केवल "भावनात्मक" नहीं, बल्कि समकालीन और वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए, जिससे बच्चा न तो अपनी संस्कृति से कटे, न ही अंध-अनुकृति में फँसे। यदि शिक्षक और स्कूल संवेदनशीलता, रचनात्मकता और समावेशन के साथ **IKS** को पाठ्यक्रम में पिरो सकें, तो **Preparatory** स्तर की

शिक्षा वास्तव में "स्थानीय से वैश्विक" की यात्रा बन सकती है – जहाँ बच्चा अपनी पहचान के साथ-साथ दुनिया से संवाद करने की क्षमता भी विकसित कर पाता है।

KENWALA2 YOUTUBE / PHONE PAY / WHATSAPP 7055667037

कार्य 4: Foundational और Preparatory Stage के Curricular Goals व Competencies की तुलना तथा FLN का महत्व

विषय-सूची

1. प्रस्तावना
2. **Foundational** और **Preparatory Stage** का संक्षिप्त परिचय
3. **Foundational Stage** के **Curricular Goals** और **Competencies**
4. **Preparatory Stage** के **Curricular Goals** और **Competencies**
5. दोनों चरणों के बीच तुलना और अंतर **(Compare & Contrast)**
6. **FLN (Foundational Literacy and Numeracy)** का अर्थ
7. **FLN** का महत्व – बच्चे, कक्षा और शिक्षा-प्रणाली के लिए
8. निष्कर्ष

कार्य 4 Foundational vs Preparatory Stage: Curricular Goals, Competencies और FLN का महत्व

1. प्रस्तावना

NEP 2020 के बाद स्कूल शिक्षा को **5+3+3+4** ढाँचे में बाँटा गया है, जिसमें **3–8** वर्ष का **Foundational Stage** और **8–11** वर्ष का **Preparatory Stage** बहुत महत्वपूर्ण माने गए हैं। इन्हीं चरणों में बच्चा भाषा, संख्या, व्यवहार और अनुशासन की बुनियादी आदतें सीखता है। इस असाइनमेंट में पहले दोनों चरणों के **Curricular Goals** और **Competencies** (कौशल/दक्षताएँ) का तुलना-आधारित विश्लेषण किया गया है, और फिर **FLN (Foundational Literacy and Numeracy)** के महत्व पर चर्चा की गई है।

2. Foundational और Preparatory Stage का संक्षिप्त परिचय

- **Foundational Stage (3–8 वर्ष):**
  इसमें **3** वर्ष की **Pre-school/Anganwadi +** कक्षा **1–2** शामिल हैं। इस स्तर पर खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित और पूरी तरह बाल-केन्द्रित शिक्षा पर ज़ोर होता है।
- **Preparatory Stage (8–11 वर्ष):**
  इसमें कक्षा **3–5** आती हैं। यहाँ भी गतिविधि-आधारित सीखना जारी रहता है, लेकिन विषयों की संरचना स्पष्ट होने लगती है; बच्चा धीरे-धीरे अधिक औपचारिक **(formal)** सीखने की ओर बढ़ता है।

दोनों चरणों के **Curricular Goals** जुड़ाव रखते हैं, पर गहराई और जटिलता में फर्क है।

3. Foundational Stage के Curricular Goals और Competencies

Curricular Goals (मुख्य लक्ष्य):

- बच्चे में **Foundational Literacy and Numeracy** की नींव रखना – अक्षर पहचान, शब्द पढ़ना, सरल वाक्य लिखना, गिनती करना, जोड़-घटाव समझना।
- भाषा, भावनात्मक विकास, सामाजिक व्यवहार और मोटर स्किल्स (दौड़ना, कूदना, पकड़ना, लिखना) का समग्र विकास।
- बच्चे की जिज्ञासा, कल्पना, खेल, गीत, कहानी, कला और बातचीत के माध्यम से सीखने की आदत बनाना।
- सुरक्षा, प्रेम, पोषण और सकारात्मक वातावरण देना, ताकि बच्चा स्कूल से जुड़ाव महसूस करे।

Competencies (दक्षताएँ) – उदाहरण:

- अपनी मातृभाषा/भाषा में सरल निर्देश समझना और प्रतिक्रिया देना।
- अक्षर, मात्रा, सरल शब्द और वाक्य पहचानना व पढ़ना।
- **1** से **100** तक संख्या पहचानना, तुलना करना (बड़ा-छोटा), सरल जोड़-घटाव करना **(Concrete objects** के साथ)।
- रंग, आकार, समय की सरल समझ, आस-पास के परिवेश की बुनियादी जानकारी।
- साथियों के साथ खेलना, बारी लेना, अपनी ज़रूरत शब्दों में व्यक्त करना, बुनियादी स्वच्छता की आदतें अपनाना।

4. Preparatory Stage के Curricular Goals और Competencies

Curricular Goals (मुख्य लक्ष्य):

- **Foundational Stage** में बनी **FLN** नींव को मजबूत और विस्तार देना – धाराप्रवाह पढ़ना, विचार लिखना, अधिक जटिल संख्या और गणितीय अवधारणाएँ समझना।

KENWOLA2 YOUTUBE / PHONE Pay / WHATSAPP/05566 7037

- विषयों (भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन/विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, कला) की प्रारम्भिक औपचारिक संरचना से परिचय।
- तर्क, विश्लेषण, समस्या समाधान, समूह-कार्य और प्रोजेक्ट-आधारित सीख को प्रोत्साहन।
- मूल्य-शिक्षा, पर्यावरण जागरूकता और सामाजिक संवेदनशीलता विकसित करना।

Competencies (दक्षताएँ) **–** उदाहरण:

- पाठ को समझकर पढ़ना (**reading with comprehension**) **–** कहानी, अनुच्छेद से मुख्य बात निकालना।
- पैराग्राफ लिखना, सरल पत्र/रचना, अपने विचार/अनुभव को लिखित रूप देना।
- **4-5** अंकों की संख्या, गुणा-भाग, भिन्न, माप (लंबाई, वजन, समय) की समझ।
- स्थानीय पर्यावरण, जल, खेती, मौसम, समुदाय, मानचित्र आदि की बुनियादी जानकारी।
- समूह में काम करना, प्रोजेक्ट बनाना, अपनी बात तार्किक ढंग से रखना, प्रश्न पूछना और सरल तर्क देना।

5. दोनों चरणों के बीच तुलना और अंतर (**Compare & Contrast**)

समानताएँ:

- दोनों ही बाल-केन्द्रित (**child-centred**) और गतिविधि-आधारित सीख पर ज़ोर देते हैं।
- दोनों में भाषा और गणित प्रमुख भूमिका निभाते हैं, साथ में पर्यावरण, कला और खेल का भी समावेश होता है।
- दोनों के **curricular goals** में बच्चे के समग्र विकास (**physical, cognitive, emotional, social**) की बात की गई है।

अंतर:

- **Foundational Stage** में अधिक **informal, play-based learning** है; **Preparatory** में सीख धीरे-धीरे **formal** और **structured** होती जाती है।
- **Foundational** में **competencies** अधिकतर बुनियादी पहचान, मौखिक भाषा, सरल गिनती और मोटर स्किल्स पर हैं; **Preparatory** में पढ़ने की समझ, लिखित अभिव्यक्ति, जटिल गणित और विषय-विशेष समझ शामिल हो जाती है।
- **Foundational** का मुख्य फोकस "स्कूल और सीखने से परिचय" है; **Preparatory** का फोकस "आगे के **Middle** और **Secondary** स्तर के लिए शैक्षिक तैयारी" है।

संक्षेप में, **Foundational Stage** "नींव" है और **Preparatory Stage** उस नींव पर "पहली मंज़िल" है; दोनों का तालमेल शिक्षा की समग्र सफलता तय करता है।

6. FLN (Foundational Literacy and Numeracy) का अर्थ

KENWADE YOUTUBE / PLOVE POY / WHATSAPP 7055667037

Foundational Literacy:

- बच्चा अक्षर, मात्रा, शब्द और वाक्य पहचान सके, सही ढंग से पढ़ सके, और जो पढ़ा है उसे समझ भी सके।
- अपने अनुभव और विचार को सरल लिखित भाषा में व्यक्त कर सके।

Foundational Numeracy:

- संख्या की अवधारणा समझना – गिनती, मात्रा, बड़ा-छोटा, क्रम।
- सरल जोड़, घटाव, आगे चलकर गुणा-भाग, पैटर्न, माप आदि की बुनियादी समझ।

FLN का अर्थ है कि कक्षा **3** तक हर बच्चे के पास पढ़ने-लिखने और बुनियादी गणित की इतनी क्षमता हो कि वह आगे के सभी विषयों को समझ सके।

KENWALD2 YOUTUBE / PHONE Pay / WHATSAPP 7015667067

7. FLN का महत्व – बच्चे, कक्षा और शिक्षा-प्रणाली के लिए

1. आगे की पढ़ाई की कुंजी:
   यदि बच्चा अच्छी तरह पढ़ नहीं पा रहा, तो वह विज्ञान, समाज विज्ञान, गणित – किसी भी विषय को सही से नहीं समझ पाएगा। **FLN** मजबूत होने से वह आगे की कक्षाओं में नई जानकारी को स्वतः ग्रहण कर सकता है।
2. ड्रॉप-आउट और फेलियर कम करने में मदद:
   जिन बच्चों की **FLN** कमजोर रहती है, वे धीरे-धीरे पीछे छूटने लगते हैं, कक्षा उन्हें कठिन लगने लगती है, और अंततः वे स्कूल छोड़ भी सकते हैं। **FLN** पर ज़ोर देने से यह समस्या काफी हद तक कम हो सकती है।
3. आत्मविश्वास और **Motivation:**
   जब बच्चा खुद से किताब पढ़ लेता है, सवाल समझकर हल कर लेता है, तो उसके अंदर "मैं कर सकता हूँ" की भावना पैदा होती है। यह आत्मविश्वास आगे की पूरी शिक्षा यात्रा में उसे सहारा देता है।
4. समाज और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव:
   बड़े स्तर पर देखें तो ऐसी पीढ़ी जो बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान में सक्षम है, वह बेहतर निर्णय ले सकती है, रोजगार के अवसरों का लाभ उठा सकती है और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भाग ले सकती है। **NEP 2020** ने **FLN** को "राष्ट्रीय प्राथमिकता" इसलिए माना है।
5. **Foundational** और **Preparatory Stage** को जोड़ने वाली सेतु:
   FLN के बिना **Preparatory Stage** के **curricular goals** हासिल नहीं हो सकते। यदि **Foundational Stage** में **FLN** अच्छी तरह स्थापित हो जाए, तो **Preparatory** स्तर पर शिक्षक को बार-बार अक्षर/संख्या की बुनियादी बातें दोहराने के बजाय, उच्चतर सोच **(higher-order thinking)** पर ध्यान देने का अवसर मिलेगा।

8. निष्कर्ष

Foundational और **Preparatory Stage** के **Curricular Goals** और **Competencies** एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, लेकिन दोनों की भूमिका अलग-अलग स्तरों पर है – **Foundational** चरण बच्चे की बुनियादी भाषा, संख्या और सामाजिक व्यवहार की नींव रखता है, जबकि **Preparatory** चरण उसी नींव पर अधिक औपचारिक और गहन सीख का निर्माण करता है। **FLN** इन दोनों को जोड़ने वाली सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है; यदि **FLN** मज़बूत न हो, तो आगे की पूरी शिक्षा कमजोर पड़ जाती है। इसलिए नीति-निर्माताओं, शिक्षकों और विद्यालयों के लिए यह आवश्यक है कि वे **Foundational** और **Preparatory** दोनों चरणों में **FLN** को केंद्र में रखकर पाठ्यचर्या, **pedagogy** और मूल्यांकन की योजना बनाएं, ताकि हर बच्चा आगे की शिक्षा के लिए सचमुच सक्षम हो सके।

KENWALA2 YOUTUBE / PHONE PAY / WHATSAPP 7055667031

कार्य 5: किसी एक Curricular Goal के लिए दो Competencies के Learning Outcomes व Activities का डिज़ाइन

विषय-सूची

1. प्रस्तावना
2. चुना गया विषय-क्षेत्र और **Curricular Goal**
3. **Competency 1: Learning Outcomes** और **Activities**
4. **Competency 2: Learning Outcomes** और **Activities**
5. निष्कर्ष

1. प्रस्तावना

इस कार्य में एक स्कूल विषय से एक **Curricular Goal** चुनकर, उसकी दो विशिष्ट **Competencies** के लिए **Learning Outcomes** और **Activities** तैयार करने हैं। यहाँ मैं **Preparatory Stage** (कक्षा **3–5**) के लिए "भाषा (हिंदी)" विषय चुन रही हूँ, क्योंकि इस स्तर पर भाषा-विकास और **FLN** दोनों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है।

2. चुना गया विषय-क्षेत्र और Curricular Goal

विषय: हिंदी (**Preparatory Stage** – कक्षा **4** मानकर)

चुना गया **Curricular Goal** (उदाहरण):
"विद्यार्थी अपनी कक्षा-स्तर की सरल गद्य-कथाओं को समझकर पढ़ सके, मुख्य विचार पहचान सके और मौखिक/लिखित रूप में अपने विचार व्यक्त कर सके।"

मैं इसी **Curricular Goal** से जुड़ी दो **Competencies** चुन रही हूँ:

1. **Competency 1** – पठन-कौशल (**Reading with comprehension**)
2. **Competency 2** – मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति (**Oral & written expression**)

नीचे दोनों के लिए स्पष्ट **Learning Outcomes** और **Activities** दी जा रही हैं।

3. Competency 1: पठन-कौशल (Reading with comprehension) (A) Learning Outcomes (कक्षा 4 स्तर)

इस **Competency** के लिए पाठ के अंत तक बच्चा सक्षम होगा कि:

1. कक्षा-स्तर की **150–200** शब्दों की सरल कहानी/अनुच्छेद को सही गति और उच्चारण के साथ पढ़ सके।
2. पढ़े हुए पाठ से मुख्य विचार (**main idea**) और कम से कम **3** महत्वपूर्ण बिंदु पहचान सके।
3. पाठ पर आधारित सरल तथ्यात्मक प्रश्नों के उत्तर दे सके (कौन, क्या, कहाँ, कब)।
4. पाठ से जुड़े अपनी राय/भावना एक-दो वाक्यों में मौखिक रूप से व्यक्त कर सके (जैसे – "मुझे कहानी का कौन-सा हिस्सा सबसे अच्छा लगा और क्यों?")।

(B) Activities / Learning Experiences

1. **Guided Reading Circle** (सामूहिक पठन चक्र)

- शिक्षक **8–10** बच्चों के छोटे समूह में बैठकर एक छोटी कहानी चुनते हैं।
- पहले शिक्षक **1–2** पैराग्राफ ज़ोर से पढ़ते हैं, फिर बारी-बारी से बच्चे पढ़ते हैं।
- जहाँ बच्चा अटकता है, शिक्षक नर्मी से उच्चारण ठीक करवाते हैं।
- पढ़ने के बाद, शिक्षक **3–4** सरल प्रश्न पूछते हैं:
- "कहानी में मुख्य पात्र कौन है?"
- "कहानी कहाँ घटती है?"
- "कहानी की सबसे ज़्यादा महत्त्वपूर्ण घटना क्या है?"

2. **Picture–to–Text Activity** (चित्र से पाठ की समझ)

- पहले बोर्ड/चार्ट पर कहानी से जुड़ा चित्र दिखाया जाता है (जैसे – गाँव का दृश्य, परिवार, जानवर आदि)।
- बच्चों से पूछा जाता है: "तुम्हें क्या लग रहा है, यह कहानी किस बारे में होगी?"
- फिर शिक्षक कहानी पढ़वाते हैं और बाद में बच्चों से पूछते हैं कि उनकी पहले की कल्पना और असली कहानी में क्या समानता/अंतर था।

KENWALA2 YOUTUBE / PHONEPAY / WHATSAPP 9055667037

- इससे बच्चा अनुमान लगाना, मुख्य विचार ढूँढना और समझ के साथ पढ़ना सीखता है।

3. **"Main Idea"** कार्ड गेम

- कहानी के **4–5** वाक्यों को अलग-अलग कार्ड पर लिखा जाता है (मुख्य विचार **+** कुछ विवरण)।
- समूहों में बच्चों से कहा जाता है कि वे मिलकर तय करें **–** "इनमें से कौन-सा कार्ड मुख्य विचार दिखाता है**?"**
- चर्चा के बाद हर समूह अपना उत्तर और कारण बताता है।

इन गतिविधियों से **Competency 1** के सभी **Learning Outcomes** प्राकृतिक तरीके से पूरे हो सकते हैं।

KENWALD2 YOUTUBE / PHONE PAY / WHATSAPP 7055667037

4. Competency 2: मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति (Oral & written expression) (A) Learning Outcomes (कक्षा 4 स्तर)

इस **Competency** के लिए पाठ के अंत तक बच्चा सक्षम होगा कि:

1. पढ़ी हुई कहानी/अनुभव को अपने शब्दों में **4–5** वाक्यों में मौखिक रूप से दोहरा सके।
2. किसी एक घटना/चित्र के आधार पर कम से कम **5–6** वाक्यों का छोटा अनुच्छेद लिख सके।
3. अपनी राय/भावना (पसंद-नापसंद, अच्छा-बुरा) को सरल और स्पष्ट वाक्यों में लिख सके।
4. लिखते समय बुनियादी व्याकरण **–** जैसे पूरक वाक्य, उचित विराम चिन्ह (पूर्ण विराम, प्रश्नचिह्न) **–** का सरल प्रयोग कर सके।

(B) Activities / Learning Experiences

1. **Retelling the Story** (कहानी अपने शब्दों में सुनाना)

- कहानी पढ़ने के बाद, शिक्षक **3–4** बच्चों को आगे बुलाकर कहते हैं:
- "अब तुम बिना किताब देखे, अपनी भाषा में यह कहानी सुनाओ।"
- बाकी बच्चे ध्यान से सुनते हैं और यदि कोई भाग छूट जाए, तो जोड़ सकते हैं।
- शिक्षक ध्यान रखता है कि बच्चा शुरुआत-मध्य-अंत तीनों भागों को अपने शब्दों में कहने की कोशिश करे।
- इससे मौखिक अभिव्यक्ति, क्रम में बोलना और आत्मविश्वास बढ़ता है।

2. **"My Favourite Part"** **–** छोटी लेखन गतिविधि

- बोर्ड पर दो प्रश्न लिखे जाते हैं:

1. "कहानी का कौन-सा हिस्सा तुम्हें सबसे अच्छा लगा**?"**
2. "तुम्हें वह हिस्सा क्यों अच्छा लगा**?"**

- बच्चों से कहा जाता है कि वे कॉपी में कम से कम **5** वाक्य लिखें **–** पहले **2–3** वाक्य उस हिस्से का वर्णन, फिर **2–3** वाक्य अपनी भावना/कारण पर।
- लिखने के बाद **2–3** बच्चे अपना पैराग्राफ ज़ोर से पढ़ते हैं।
- शिक्षक सकारात्मक फीडबैक के साथ हल्के सुधार (जैसे शब्द-विन्यास, विराम चिन्ह) सुझाता है।

3. **Picture–based Writing** (चित्र देखकर अनुच्छेद लेखन)

- कहानी से जुड़ा एक चित्र या नया चित्र (जैसे **–** "बच्चे पार्क में खेल रहे हैं") दिखाया जाता है।

- बोर्ड पर कुछ मदद वाले शब्द लिखे जाते हैं – जैसे “झूला, दोस्त, खेल, हँसी, शाम”।
- बच्चों से कहा जाता है कि वे इन शब्दों की मदद से **5–6** वाक्यों का वर्णन लिखें:
- “चित्र में क्या दिख रहा है?”
- “तुम्हें वहाँ रहना कैसा लगेगा?”
- यह गतिविधि बच्चे की कल्पना, भाषा-प्रवाह और वाक्य निर्माण की क्षमता को विकसित करती है।

4. **Peer Sharing & Feedback** (साथी से साझा करना)

- बच्चे अपने लिखे हुए अनुच्छेद को बगल वाले साथी को पढ़कर सुनाते हैं।
- साथी को दो बातें कहनी हैं – एक जो उसे बहुत अच्छी लगी, और एक छोटी-सी सुधार की सलाह।
- शिक्षक उन्हें यह भाषा देता है: “मुझे यह वाक्य अच्छा लगा क्योंकि…”, “अगर तुम यहाँ यह शब्द लिखो तो और अच्छा होगा…”

इन्हीं गतिविधियों के माध्यम से मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति दोनों का समन्वित विकास हो सकता है।

5. निष्कर्ष

इस कार्य में **Preparatory** स्तर के हिंदी विषय से एक **Curricular Goal** चुनकर, उससे जुड़ी दो प्रमुख **Competencies** – पठन-कौशल और मौखिक/लिखित अभिव्यक्ति – के लिए स्पष्ट **Learning Outcomes** और व्यावहारिक **Activities** तैयार की गईं। यह उदाहरण दिखाता है कि जब **Curricular Goal** → **Competency** → **Learning Outcomes** → **Activities** की कड़ी स्पष्ट हो, तो शिक्षक को अध्यापन की दिशा साफ दिखाई देती है और बच्चा भी गतिविधि के माध्यम से वही सीखता है जो वास्तव में लक्ष्य है। इसी प्रकार अन्य विषयों (गणित, **EVS**, कला आदि) के लिए भी **Curricular Goals** से जुड़ी **Competencies**, **Outcomes** और **Activities** को सोच-समझकर डिज़ाइन किया जा सकता है।

TELEGRAM/YOUTUBE/PHONE PAY/WHATSAPP 7055667037

कार्य 6

: अभिभावकों से साक्षात्कार – अपेक्षाएँ, भूमिका और विश्लेषणात्मक रिपोर्ट

विषय-सूची

1. प्रस्तावना
2. साक्षात्कार की प्रक्रिया और प्रतिभागियों का संक्षिप्त परिचय
3. अभिभावकों की स्कूलिंग से अपेक्षाएँ

4. अभिभावकों की नज़र में उनकी अपनी भूमिका
5. अभिभावकों की समानताएँ और भिन्नताएँ – विश्लेषण
6. निष्कर्ष और मेरी सीख

कार्य 6 अभिभावक साक्षात्कार पर आधारित विश्लेषणात्मक रिपोर्ट

KENWALA2 YOUTUBE / PHONE PAY WHATSAPP 7055667037

1. प्रस्तावना

स्कूल शिक्षा केवल शिक्षक और बच्चे के बीच की प्रक्रिया नहीं है; इसमें अभिभावक भी एक अहम साझेदार होते हैं। अभिभावकों की अपेक्षाएँ और उनकी अपनी भूमिका की समझ, बच्चे के सीखने पर सीधा प्रभाव डालती है। इस कार्य के तहत मैंने 5 अभिभावकों (माता-पिता) से उनके स्कूलिंग के प्रति दृष्टिकोण, अपेक्षाएँ और अपनी भूमिका के बारे में साक्षात्कार का काल्पनिक/नमूना-आधारित विश्लेषण तैयार किया है। यह रिपोर्ट उन उत्तरों का संक्षेप, तुलना और मेरी समझ को प्रस्तुत करती है।

2. साक्षात्कार की प्रक्रिया और प्रतिभागियों का संक्षिप्त परिचय

मैंने (मानक उदाहरण के रूप में) अलग-अलग पृष्ठभूमि के 5 अभिभावकों से बात की:

- अभिभावक 1: शहरी, मध्यम-वर्गीय परिवार, बच्चा कक्षा 3 में।
- अभिभावक 2: ग्रामीण पृष्ठभूमि, सरकारी स्कूल, बच्चा कक्षा 4 में।
- अभिभावक 3: कामकाजी माता-पिता, निजी स्कूल, बच्चा कक्षा 5 में।
- अभिभावक 4: गृहिणी माँ, छोटे व्यवसाय वाले पिता, बच्चा कक्षा 2 में।
- अभिभावक 5: पहली पीढ़ी के शिक्षित माता-पिता, बच्चा कक्षा 1 में।

सभी से कुछ समान प्रश्न पूछे गए, जैसे:

- आप स्कूल से क्या-क्या अपेक्षा रखते हैं?
- आपके अनुसार स्कूल में बच्चे को क्या सबसे ज़्यादा सीखना चाहिए?
- घर पर आप अपनी क्या भूमिका मानते हैं (होमवर्क, अनुशासन, मूल्य-शिक्षा आदि)?
- क्या आप स्कूल की गतिविधियों में शामिल होना चाहते हैं/हो पाते हैं?

3. अभिभावकों की स्कूलिंग से अपेक्षाएँ

अभिभावकों के उत्तरों में कुछ मुख्य बिंदु बार-बार सामने आए:

1. अच्छी पढ़ाई और रिज़ल्ट:
   लगभग सभी अभिभावकों ने कहा कि वे चाहते हैं कि उनका बच्चा "अच्छा पढ़े", "अच्छे नंबर लाए" और "आगे चलकर अच्छा कैरियर बनाए।"
- अभिभावक **1** और **3** ने विशेष रूप से प्रतियोगी परीक्षाओं, अंग्रेज़ी और कंप्यूटर ज्ञान का जिक्र किया।
- अभिभावक **2** और **5** के लिए "कक्षा न दोहराना पड़े", "स्कूल न छोड़ दे" जैसी बुनियादी बातें भी बहुत महत्त्वपूर्ण थीं।

2. अनुशासन और व्यवहार:
   कई अभिभावकों ने उम्मीद जताई कि स्कूल बच्चे में अनुशासन, समय-पालन और सभ्य व्यवहार सिखाए।
- अभिभावक **4** ने कहा, "घर पर हम जितना भी समझाएँ, बच्चा स्कूल की बात ज़्यादा मानता है, इसलिए हम चाहते हैं कि स्कूल उससे अच्छा व्यवहार और आदतें डलवाए।"

3. समग्र विकास (खेल, कला, व्यक्तित्व):
   कुछ अभिभावकों, खासकर **1** और **3**, ने यह भी कहा कि वे चाहते हैं कि बच्चे को खेल, डांस, ड्राइंग, पब्लिक स्पीकिंग वगैरह का भी मौका मिले।
- "केवल किताब नहीं, थोड़ा आत्मविश्वास और सामने बोलने की क्षमता भी आए" – यह उनकी अपेक्षा थी।

4. सुरक्षा और देखभाल:
   सभी अभिभावकों ने बच्चे की सुरक्षा, सम्मान और दयालु वातावरण को बहुत ज़रूरी बताया।
- अभिभावक **5** ने कहा, "हमें सबसे पहले यह चाहिए कि बच्चा वहां सुरक्षित रहे, उसे डाँट-फटकार की जगह प्यार और समझ मिले।"

समग्र रूप से देखा जाए तो स्कूल से अपेक्षाएँ अकादमिक सफलता, अनुशासन, समग्र विकास और सुरक्षा – चारों से जुड़ी दिखाई दीं, पर उनमें ज़ोर प्रत्येक परिवार की पृष्ठभूमि के अनुसार अलग-अलग था।

4. अभिभावकों की नज़र में उनकी अपनी भूमिका

1. होमवर्क और पढ़ाई में मदद:
- अधिकांश अभिभावक मानते हैं कि घर पर उनकी भूमिका है "बच्चे को पढ़ने बिठाना", "होमवर्क करवाना" और "परीक्षा के समय ध्यान रखना कि बच्चा खेल में न उलझ जाए।"
- अभिभावक **3** ने बताया कि वे कामकाजी हैं, इसलिए रोज़ खुद नहीं बैठ पाते, पर **tuition** लगवाकर या किसी बड़े भाई/बहन से मदद लेते हैं।

2. मूल्य-शिक्षा और व्यवहार:
- अभिभावक **2** और **4** ने कहा कि घर पर वे बच्चे को "बड़ों का आदर करना, छोटे काम खुद करना, झूठ न बोलना, झगड़ा न करना" जैसी बातें सिखाने की कोशिश करते हैं।
- उनके अनुसार, "संस्कार" देना घर की ज़िम्मेदारी है, जबकि "किताब की पढ़ाई" स्कूल की।

3. स्कूल से संपर्क / **Parent–Teacher Meet:**
- अभिभावक **1** और **3** अक्सर **Parent–Teacher Meeting** में जाते हैं, **WhatsApp** ग्रुप पर ध्यान रखते हैं और स्कूल की गतिविधियों में भाग लेने की इच्छा रखते हैं।

LEARWOLD2 YOUTUBE / PHONE PAY WHATSAPP7055667032

- अभिभावक **2** और **5** ने स्वीकार किया कि वे समय की कमी, काम और दूरी की वजह से कम जा पाते हैं, लेकिन यदि उन्हें पहले से जानकारी मिले और समय सुविधाजनक हो, तो वे जाना चाहते हैं।

4. प्रेरणा और भावनात्मक समर्थन:

- दो-तीन अभिभावकों ने यह भी कहा कि वे बच्चों को "डाँट-डपट की जगह हौसला देने" पर ज़ोर देना चाहते हैं, पर कभी-कभी परिणाम देखकर वे खुद भी चिड़चिड़े हो जाते हैं।
- वे समझते हैं कि उन्हें बच्चे की बात सुनने, उसकी मुश्किल समझने और गलतियों को केवल सज़ा नहीं, सुधार का मौका मानने की जरूरत है।

कुल मिलाकर, अभिभावक अपनी भूमिका को पढ़ाई में मदद, अनुशासन, मूल्य-शिक्षा और भावनात्मक सहारा – इन चार हिस्सों में बाँटते दिखे, लेकिन हर कोई इसे एक समान तरह से निभा नहीं पा रहा।

LENVOLO2 YOUTUBE / PHONE PAY / WHATSAPP 7055660037

5. अभिभावकों की समानताएँ और भिन्नताएँ – विश्लेषण

समानताएँ:

- सभी चाहते हैं कि बच्चा "कुछ बन जाए" – चाहे उनका तरीका और शब्द अलग हों, पर शिक्षा को जीवन सुधार का माध्यम मानने में वे एकमत हैं।
- सुरक्षा, अच्छा व्यवहार, सम्मान और शिक्षक का सहयोग – ये सभी के लिए ज़रूरी हैं।
- अधिकांश अभिभावक मानते हैं कि घर और स्कूल दोनों मिलकर ही बच्चे को सही दिशा दे सकते हैं; अकेले कोई भी पर्याप्त नहीं।

भिन्नताएँ:

- शहरी/मध्यम-वर्गीय अभिभावक **(1,3)** अधिक ज़ोर अंग्रेज़ी, कम्प्यूटर, को-करिकुलर गतिविधियों और प्रतिस्पर्धा पर दे रहे थे, जबकि ग्रामीण/पहली पीढ़ी के शिक्षित अभिभावक **(2,5)** के लिए बुनियादी साक्षरता, स्कूल में टिके रहना और न्यूनतम संसाधनों में पढ़ाई सबसे बड़ा लक्ष्य था।
- कुछ अभिभावक अपने को "सक्रिय भागीदार" मानते हैं – **PTM** में जाते हैं, शिक्षक से बात करते हैं; जबकि कुछ अपने को "थोड़ा दूर" महसूस करते हैं – या तो समय, या भाषा, या आत्मविश्वास की कमी से।
- अनुशासन के तरीके में भी फर्क दिखा – कुछ अधिक सख़्ती में विश्वास रखते हैं, तो कुछ बातचीत और समझाने पर, हालांकि सभी ने माना कि बहुत ज़्यादा मार-पीट या अपमान का असर बच्चे पर बुरा पड़ता है।

महत्वपूर्ण निष्कर्ष (विश्लेषण):

- यदि स्कूल अभिभावकों की विविध पृष्ठभूमि को समझकर, उनके साथ सहयोगी रिश्ता बनाए, तो बच्चों के विकास के लिए बहुत सकारात्मक वातावरण बन सकता है।
- कई अभिभावक अपनी भूमिका निभाना चाहते हैं, पर उन्हें मार्गदर्शन की ज़रूरत है – जैसे "घर पर बच्चे को कैसे पढ़ाएँ?", "स्क्रीन टाइम कैसे नियंत्रित करें?", "टेंशन दिए बिना पढ़ाई कैसे कराएँ?" इत्यादि।

- शिक्षक के लिए यह समझना ज़रूरी है कि हर अभिभावक “बेपरवाह” नहीं होता; कई बार सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ उसकी भागीदारी सीमित कर देती हैं।

6. निष्कर्ष और मेरी सीख

इन **5** अभिभावकों के साक्षात्कार और विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि स्कूलिंग के प्रति अभिभावकों की अपेक्षाएँ बहुस्तरीय हैं – वे अच्छी पढ़ाई, अनुशासन, समग्र विकास और सुरक्षित वातावरण – सभी चाह रहे हैं। साथ ही, वे स्वयं भी बच्चे के विकास में भूमिका निभाना चाहते हैं, पर हमेशा समान रूप से सक्षम या समर्थ महसूस नहीं करते।

मेरे लिए सबसे बड़ी सीख यह है कि भावी/वर्तमान शिक्षक के रूप में अभिभावकों को “सिर्फ़ दबाव डालने वाले” नहीं, बल्कि “सहयोगी साझेदार” के रूप में देखना चाहिए। यदि हम उनकी परिस्थितियों, सपनों और चिंताओं को समझकर उनसे संवाद करें, तो घर-स्कूल की साझेदारी मज़बूत होगी और बच्चा भी अधिक सुरक्षित, समर्थ और प्रेरित महसूस करेगा। इस तरह, अभिभावक-साक्षात्कार केवल एक औपचारिक कार्य नहीं, बल्कि शिक्षक-प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो हमें शिक्षा को परिवार और समाज से जोड़कर देखने की दृष्टि देता है।

KENWIL02 YOUTUBE / PHONE PAY / WHATSAPP 7055667067

कार्य 7: PARAKH Assessment Cards भरने की प्रक्रिया और अनुभव–रिपोर्ट

विषय-सूची

1. प्रस्तावना

2. **PARAKH Assessment Cards** का संक्षिप्त परिचय
3. तीन विद्यार्थियों के लिए कार्ड भरने की प्रक्रिया
4. रिपोर्ट कार्ड भरने में अपनाई गई रणनीतियाँ **(Strategies)**
5. सामने आई चुनौतियाँ
6. निष्कर्ष और मेरी सीख

कार्य 7 PARAKH Assessment Cards भरने की प्रक्रिया पर विस्तृत रिपोर्ट

KENWALA2 YOUTUBE / PHONEPay / WHATSAPP 7055667037

1. प्रस्तावना

Foundational और **Preparatory Stage** में मूल्यांकन का उद्देश्य केवल "नंबर देना" नहीं, बल्कि बच्चे के समग्र विकास को समझना और आगे की सीख में सहायता करना है। **PARAKH** द्वारा विकसित **Assessment Cards** इसी दृष्टि से बनाए गए हैं, जिनमें भाषा, गणित, पर्यावरण, सामाजिक-भावनात्मक विकास, शारीरिक विकास आदि सभी पहलुओं पर नज़र रखी जाती है। इस कार्य के अंतर्गत मैंने अपनी कक्षा के तीन विद्यार्थियों के लिए ये कार्ड भरने का नमूना तैयार किया और पूरी प्रक्रिया, उपयोग की गई रणनीतियों तथा अनुभव की चुनौतियों को इस रिपोर्ट में संक्षेपित किया है।

2. PARAKH Assessment Cards का संक्षिप्त परिचय

PARAKH के **Assessment Cards:**

- कक्षा-स्तर पर अपेक्षित **Competencies** और **Learning Outcomes** को सूचीबद्ध करते हैं।
- विभिन्न क्षेत्रों **(Domains)** को कवर करते हैं, जैसे: भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन, मोटर स्किल्स, सामाजिक-भावनात्मक विकास, कला और रचनात्मकता आदि।
- प्रायः **"3-या 4** स्तरों" में दर्ज किए जाते हैं – जैसे **"Needs support / Developing / Proficient / Advanced"** (या समकक्ष हिंदी शब्द: सहायता की आवश्यकता, प्रगति पर, सक्षम, उत्कृष्ट)।
- केवल साल के अंत में नहीं, बल्कि पूरे साल भर के **Formative Assessment** के आधार पर भरने की अपेक्षा रखते हैं।

इन कार्डों की खासियत है कि वे केवल अकादमिक प्रदर्शन नहीं, बल्कि बच्चे के व्यवहार, भागीदारी और समग्र विकास की झलक भी देते हैं।

3. तीन विद्यार्थियों के लिए कार्ड भरने की प्रक्रिया

मैंने **Preparatory Stage** (कक्षा **3/4** मानकर) के तीन काल्पनिक विद्यार्थियों – विद्यार्थी **A**, विद्यार्थी **B** और विद्यार्थी **C** – के लिए कार्ड भरने का उदाहरण तैयार किया:

- विद्यार्थी **A:**
  भाषा में अच्छा, पढ़ने-लिखने में तेज; गणित में औसत; समूह-कार्य और बोलने में सक्रिय।
- विद्यार्थी **B:**
  भाषा में धीमा, पढ़ने में अटकता; गणित में चित्र/**Concrete material** के साथ बेहतर; शर्मीला, पर ध्यान से सुनता है।
- विद्यार्थी **C:**
  भाषा और गणित दोनों में मध्यम; लेकिन कला, चित्रकारी, मॉडल बनाना, गतिविधि में बहुत अच्छा; कभी-कभी क्लास में ध्यान भटक जाता है।

प्रक्रिया **(Step-wise):**

1. पूरे सत्र के नोट्स और कॉपी/वर्कशीट देखना
- सबसे पहले मैंने उनकी नोटबुक, वर्कशीट, प्रोजेक्ट, मौखिक परीक्षण की छोटी-छोटी **Observation Notes** और डायरी देखी।
- इससे भाषा और गणित के **Learning Outcomes** पर उनकी स्थिति की स्पष्ट तस्वीर मिली।
2. कक्षा में प्रत्यक्ष अवलोकन **(Classroom Observation)**
- मैंने **1–2** सप्ताह तक विशेष ध्यान से देखा कि ये तीनों बच्चे समूह-कार्य, कहानी-सुनने, खेल और चर्चा के समय कैसे भाग लेते हैं।
- उदाहरण: कौन बच्चा स्वेच्छा से उत्तर देता है, कौन चुप रहता है पर समझ दिखाता है, कौन नेतृत्व करता या पीछे हटता है।
3. संक्षिप्त चेकलिस्ट और रेटिंग
- **Assessment Card** में दी गई हर **Competency** के लिए मैंने एक छोटी-सी चेकलिस्ट बनाई, जैसे:
- "क्या बच्चा **2–3** पैराग्राफ की कहानी समझकर पढ़ सकता है?"
- "क्या बच्चा **3**-अंकों की संख्या में जोड़-घटाव कर सकता है?"
- "क्या बच्चा साथियों के साथ सहयोग से काम करता है?"
- इन पर "हाँ / आंशिक / नहीं" या **1–4** रेटिंग (कम से अधिक) के रूप में स्वयं को संकेत दिए, फिर उन्हें कार्ड के स्केल **(Needs support, Developing, Proficient…)** में बदला।
4. विद्यार्थी से छोटी बातचीत **(Student Conference)**
- हर बच्चे से **5–7** मिनट अकेले में बात की –
- "तुम्हें कौन-सा विषय अच्छा लगता है?"
- "तुम्हें कहाँ कठिनाई महसूस होती है?"
- "तुम किस चीज़ में अपने आप को अच्छा मानते हो?"
- इससे उनकी आत्म-धारणा **(self-perception)** समझी, जो कार्ड भरते समय टिप्पणी **(remarks)** में उपयोगी रही।

इन सभी स्रोतों के आधार पर मैंने तीनों विद्यार्थियों के लिए कार्ड भरे – किसी एक टेस्ट या परीक्षा पर निर्भर न होकर, पूरे साल के सतत अवलोकन पर।

KENWALA2 YOUTUBE PHONE PAY / WHATSAPP7055667037

4. रिपोर्ट कार्ड भरने में अपनाई गई रणनीतियाँ (Strategies)

1. बहु-स्रोत (**Multiple Evidence**) पर आधारित निर्णय

- केवल लिखित परीक्षा के अंकों से निर्णय नहीं लिया; मौखिक भागीदारी, प्रोजेक्ट, समूह-कार्य, कक्षा में उत्तर देने, और व्यवहार को भी शामिल किया।
- इससे बच्चे की अधिक संतुलित (**holistic**) तस्वीर सामने आई।

2. **Competency-wise** सोच

- **PARAKH** कार्ड पर जो-जो **Competencies** लिखी थीं, उन्हें एक-एक करके देखा और प्रत्येक के लिए ठोस उदाहरण (**evidence**) खोजा –
- जैसे भाषा के लिए: "विद्यार्थी **A** समूह के सामने कहानी सुना चुका है", "विद्यार्थी **B** एक पैराग्राफ पढ़ने में समय लेता है, पर अर्थ समझ लेता है" आदि।
- इससे "सामान्य" राय के बजाय स्पष्ट कारणों के साथ रेटिंग देना संभव हुआ।

3. "**Deficit**" की बजाय "**Next Step**" दृष्टि

- जहाँ बच्चा "**Needs Support**" या "**Developing**" पर था, वहाँ कार्ड पर केवल कमी नहीं लिखी, बल्कि "अगला कदम क्या होगा?" यह भी अपने लिए नोट किया –
- जैसे विद्यार्थी **B** के लिए: "दैनिक **10** मिनट **Guided Reading** – बड़े अक्षरों वाला पाठ, चित्रों के साथ।"
- इससे **Assessment** वास्तव में **Teaching** को मार्गदर्शन देने वाला उपकरण बना।

4. तुलना दूसरे बच्चों से नहीं, स्वयं से

- मैंने तीनों बच्चों की तुलना आपस में नहीं की, बल्कि प्रत्येक को उसकी अपनी प्रगति के संदर्भ में देखा – "सत्र की शुरुआत की तुलना में अब कहाँ पहुँचा है?"
- इससे कार्ड में टिप्पणी करते समय "तुम दूसरों से कम हो" की बजाय "तुमने खुद में यह सुधार किया है, आगे यह प्रयास करो" जैसे वाक्य इस्तेमाल किए।

5. सकारात्मक और स्पष्ट भाषा का प्रयोग

- रिपोर्ट कार्ड में प्रयुक्त भाषा सावधानी से चुनी –
- नकारात्मक: "बच्चा ध्यान नहीं देता, कुछ नहीं आता"
- की जगह सकारात्मक/रचनात्मक: "कभी-कभी ध्यान भटक जाता है; छोटे-छोटे कार्यों में विभाजित करने पर बेहतर करता है।"
- इससे अभिभावकों और बच्चों दोनों के लिए संदेश अधिक स्वीकार्य और प्रेरक बना।

5. सामने आई चुनौतियाँ

1. समय की कमी

- हर **Competency** को ध्यान से देखना और तीनों बच्चों के लिए विस्तृत नोट्स बनाना समय-साध्य था। अगर पूरी कक्षा के लिए यही करना हो, तो सही समय-योजना और सहायता की जरूरत होगी।

2. सब **Domains** में समान स्पष्टता न होना

- भाषा और गणित के लिए तो **Learning Outcomes** स्पष्ट और मापने योग्य थे, पर सामाजिक-भावनात्मक विकास या सृजनात्मकता जैसे क्षेत्रों का आकलन करना अधिक **Subjective** लगा।

KENWADEE YOUTUBE / PHONEPAY / WHATSAPP 7055567037

- कभी-कभी यह तय करना कठिन था कि “**Developing**” और “**Proficient**” के बीच वास्तविक अंतर कहाँ खींचें।

3. **Bias** (पूर्वधारणा) का खतरा

- जिन बच्चों को हम “शांत, आज्ञाकारी” मानते हैं, उन्हें अनजाने में बेहतर रेटिंग दे देना आसान होता है, और “शरारती” बच्चों के बारे में ज़्यादा आलोचनात्मक होना भी।
- मुझे बार-बार खुद को याद दिलाना पड़ा कि मैं केवल व्यवहार पर नहीं, सीखने के साक्ष्य पर आधारित निर्णय लूँ।

4. अभिभावकों को समझाना

- पारंपरिक मार्क्स/ग्रेड के आदी अभिभावकों को यह समझाना कि “**Needs Support**” का मतलब “फेल” नहीं, बल्कि “अभी सीखने की प्रक्रिया में” है – यह आसान नहीं होता।
- इसके लिए अलग से संवाद और **Parent–Teacher Meeting** में समझाने की आवश्यकता महसूस हुई।

6. निष्कर्ष और मेरी सीख

PARAKH Assessment Cards भरने की प्रक्रिया ने यह स्पष्ट किया कि प्रारम्भिक और तैयारी चरण में मूल्यांकन एक सतत, बहु-आयामी और सहयोगी प्रक्रिया है, न कि सिर्फ़ साल के अंत की रिपोर्ट। तीन विद्यार्थियों के लिए नमूना कार्ड भरते हुए मैंने सीखा कि:

- **Competency-based** मूल्यांकन से हमें बच्चे की ताकत और आवश्यकता दोनों का विस्तार से पता चलता है।
- यदि हम विभिन्न स्रोतों (कक्षा-अवलोकन, कार्य, बातचीत, परीक्षा) से साक्ष्य लेकर निष्पक्ष रेटिंग दें, तो कार्ड वास्तव में सीखने और अध्यापन दोनों को दिशा दे सकते हैं।
- चुनौतियाँ – समय, **Subjectivity**, अभिभावकों की समझ – वास्तविक हैं, लेकिन सही योजना, सहयोग और संवाद से इन्हें संभाला जा सकता है।

मेरे लिए सबसे बड़ी सीख यह है कि ऐसे **Assessment Cards** को केवल “औपचारिकता” न मानकर, उन्हें अपने **Teaching-Learning** चक्र का अभिन्न हिस्सा बनाना चाहिए, ताकि हर बच्चा उसके अनुरूप सहयोग और अवसर पा सके जिसकी उसे वास्तव में ज़रूरत है।

KENWILD2YOUTUBE / PHONE PAY / WHATSAPP 7055667037